Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityanand Baba Ashram

❀ श्री ❀

॥ श्री निकुञ्जविहारिणे नमः ॥

अथ राधा विनोद काव्यम् ।

—:❀❀❀❀:—

❀ श्लोकः ❀

माली नो घनमाली मालीनो बनमाली ।
मालीनो बलमाली मालीनोऽवतु माली ॥ १ ॥

जिन श्रीकृष्ण चन्द्र के हृदय रूप दर्पण में मा(लक्ष्मी) लीन (लगी) है, तथापि लोकपरम्परा रीतिसे अथवा कामदेव के उत्पन्न करने से कामकी उत्पत्ति के द्वारा लक्ष्मी में लीन है, और जो मा (माया) में निरञ्जन निराकर होने में आसक्त नहीं है, और जो मा [लक्ष्मी] में आसक्त नहीं है तो भी जिनमें मा (लक्ष्मी] स्वयं आसक्त है, और शोभायमान यदुवंशादि गोपों के स्वामी व सुशोभित इन्द्रादि देवताओं के स्वामी हैं, और जो माली (सुदामा) के स्वामी हैं, अथवा मा (शिव) में आलीन (भेदशून्य] हैं, अथवा मा (ब्रह्मा) रूपी भ्रमर

के स्वामी हैं, जिनके अंग मेघ तुल्य हैं, जिनके वलभद्रजी सहायक हैं, और जिन्होंने लम्बी जंघा पर्यन्त उत्तम वन माला को धारण किया है, ऐसे वनमाली (श्रीकृष्णचन्द्रजी) हमारी और श्रोता गणों व वक्ताओं की रत्ता कर, अंत के ∴ माली, इस शब्द के पदच्छेद करने से मा अली ऐसे दो पद होते हैं, अली (सर्वान्तर्यामी) श्रीकृष्णजी मेरी रत्ता करैं, (शेषपदों का अर्थ पूर्ववत् जानना) इस श्लोक में कविने भगवान के दश अवतार वर्णन किये है यथा वन (जल) में शोभा को प्राप्त शंखासुर के मारने वाले बलसेयुक्त वाराहरूपी भगवान हमारी रत्ता करैं, । ।वा समस्त पृथ्वी के भार को अपने फलों पर धारण करने वाले वन (जल) में शोभायमान कूर्मरूपी भगवान हमारी रत्ता करैं, । २ । वा बनमें सुशोभित और सम्पूर्ण पृथ्वी समुद्र में डूबी हुई के उद्धार करने वाले और उस वल से युक्त वाराहरूपी भगवान हमारी रत्ता करैं, ।३। वा हिरण्य कशिपु के नष्ट करने में जो वल उस बलसे युक्त शोभा है जिनकी ऐसे नृसिंह रूपी भगवान हमारी रत्ता करैं ॥ ४ । अथवा अ (रुद्र) के स ान जिनकी घन (अत्यन्त बड़ी) शोभा है वो अनघ [अत्यन्त लघु] जिनकी शोभा है और बालिको छलन रूप वल से सुशोभित वामन रूपी भगवान हमारी रत्ता

करैं, ५ । वा स्वर्ग के मार्ग को रोककर तीर्थाटन करने के लिये बन में भ्रमण करने वाले और सम्पूर्ण क्षत्रियों के नाशकारी बल से सुशोभित परसुराम रूप भगवान हमारी रक्षा करैं ६ । वा दण्डकारण्य में है शोभा जिनकी रावण के नाश करनेवाले बल से सुशोभित दाशरथी राम चन्द्रजी मेरी रक्षा करैं, ७ । वा बलराम इस राम सहित पद से है शोभा जिनकी अर्थात् बलभद्र जिनका नाम है और श्री हनुमान जीके खींचने में जो बल उससे है शोभा जिनकी ऐसे बलदेवजी भगवान हमारी रक्षा करैं, ८ । वा जो घनमाली शरद ऋतु के मेघ समान गौर वर्ण वाले और जो अवन [रक्षा करने] से शोभायुक्त अहिंसा कारक बल से सुशोभित ऐसे बुद्धरूपी भगवान हमारी रक्षा करैं ९ । अथवा म्लेच्छों के नाश करनेवाले बल से युक्त कल्किरूपी भगवान हमारी रक्षा करैं, ० । अन्य समस्त पदों का अर्थ दशों अवतारों में समान है। अथवा इस श्लोक के वर्णन मे कवि ने मोहन मंत्र का भी उद्धार किया है ! सामान्य स्वरूप मा [शक्ति] के विषय में आलीन [मिला] है क्योंकि ईश्वर के बिना जिसका उच्चारण नहीं हो सक्ता इस भांति समस्त व्यञ्जनों में प्रथम जो ककार वह है रूप जिसका और घनसे है मा [शोभा] जिनकी ऐसा जो धनप [इन्द्र) उसके बीच

[ल] को जो प्राप्त हुआ है अर्थात् लकाररूप और भी (लक्ष्मी) का बीज जो (ई) उसमें अर्थात् विन्दु से युक्त ऐसा कामदेव को मोहन मंत्र रूप [क्लीम्] हमारी रक्षा करै, यहां शारदा तिलक में भी कहा है कि जो ईकार और विन्दु से युक्त ककार और लकार है तीनों जगत का मोहनकारी बीज मंत्र है ॥ १ ॥

विधुसुहृद्विरहानल पीडिता विधुसुहृत्तरलाऽनिल पीडिता ॥ विधुसुहृद्वदनानिल पीडिता विधु सुहृत्सुगिरोऽकिरदीडिता ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण प्यारे के बिरह रूपी अग्नि से जो पीड़ित और कामदेव से चंचल या कपूर की भांति जिसके हारकी मध्यमणि है अर्थात् कामाग्नि से पीड़ित हारके मोती भी तेजहीन हो रहे हैं और जो मलयागिरि के पवन से पीड़ित और जिसका मुख चन्द्रमा के तुल्य है व जिसका मुख कपूर की समान सफेद है और श्रीकृष्णचन्द्रजी से है पीड़ा जिसको वा स्तुति भी की है जिसकी ऐसी चन्द्रवदनी [श्रीकृष्णचन्द्र जी की प्यारी] श्रीवृषभानु दुलारी श्रीराधाजीअपनी सखीसे पूजा प्रशंसा के योग्य इन सुन्दर बचनों को कहने लगी ॥ २ ॥

उदयसे दयते दयते शशी सखि करैरकैरे

स्तिमिराकरैः ॥ दिशमिमां चरमां च रमा रमं कमल कोमललोलविलोचनम् ॥ ३ ॥

हे सखि! यह चन्द्रमा उदय होकर इस आगे वाली दिशा पर दया करके अपनी स्वच्छ किरणों द्वारा व्याप्त होरहा है और अन्धकार के नाश करने वाली दुःखदायी अपनी उष्ण [गरम] किरणों से मुझे पीड़ित करता है। इस कारण हे सखि! रमारम [लक्ष्मी के स्वामी] और कमल की भांति कोमल और चंचल है नेत्र जिनके ऐसे कमल नयन श्री कृष्णचन्द्रजी के निकट तू चल अथवा अंक (चिन्ह) रूप मल से युक्त है मस्तक जिसका ऐसा यह चन्द्रमा उदय होता है इससे तू रमारम श्री लक्ष्मी संग क्रीड़ा करनेवाले श्रीकृष्ण प्रति चल अथवा यह चन्द्रमा उदय होकर मुझे अन्तिम [मरण) दशा को प्राप्त कर रहा है, इस हेतु तू रमारम (लक्ष्मीरमण) श्रीकृष्ण प्रति चल अथवा के (सुख) में मकल (मलरूप) यह दुखदायी चन्द्रमा उदय होता है इस प्रयोजन से अमल [निर्मल) और चंचल नेत्र वाले श्रीकृष्णजी महाराजके निकट चल ॥ ३ ॥

कुमुद बंधुरबँधुरबँधुरः स तनुतेऽतनुते तनुते ततः ॥ हिमकरोऽहिमतां हिमतां मतां किमनु माँ सदृशं सदृशं विधाः ॥ ४ ॥

हे सखि! कुमुद (कोकाबेलि) का प्यारा बन्धु और शीतल व बड़ाई युक्त पूज्यता (पूजने योग्य) और विस्तार को प्राप्त हुआ वह चन्द्रमा पूजन के योग्य और ज्ञानयुक्त मेरे लिये स्वीकृत उष्णता का जो विस्तार ता है यह क्या उस चन्द्रमा को उचित है? अर्थात् बिरहीजनों को दुःख देना क्या चन्द्रमा के कुल में परम्परा से ही चला आया है? अथवा शीतल है हाथ जिनका दुष्टों के नाशकरने वाले [श्रीकृष्ण चन्द्र] मेरे लिये चन्दमा की समान उष्णता करते हैं यह क्या उस श्रीकृष्णको उचित है? अनुचित है ॥ ४ ॥

कमलिनीमलिना मलिना ऽविचलता च लतासु लता शुभाम् ॥ बिधुतभांविधुतां विधु भानुभिर्नयनयोर नयोर्नयसीनयोः ॥ ५ ॥

हे आलि [सखि) मलीन (श्याम) लताओं में घूमते हुये भ्रमर की त्यागी हुई लताओं में श्रेष्ठ और चन्द्रमा की किरणों से नष्ट होगई है कांति जिसकी ऐसी कमलनी को इन मेरे वड़े २ नेत्रों के आगे से क्यों तू दूर नहीं करती। अथवा मलिन (काले) श्री कृष्णचन्द जी की त्यागी हुई और गोपियों में श्रेष्ठ चन्द्रमा की किरणों से दुःखित मुझे हे सखि! क्या तू नहीं देखती? इस कारण श्री कृष्णचन्द्रजी के लिवाने के लिये तू शीघ्रही गमन कर ॥ ५ ॥

सखि विभाति विभाऽतिविभा न सरसी सरसीसरसारसैः ॥ अलिकुलैर्विधुता विधुताधुता विनमदब्जमुखीविमुखिस्थिता ॥ ६ ॥

हे सखि ! नष्ट है कान्ति जिसकी और पंक्तिगणों की शोभा से रहित और श्री कृष्ण तुल्य कांति कीऔर विलास सहित शब्द करने वाले सारस भ्रमरगणों का समूह चन्द्रमा इनकी त्यागी हुई और नीचे को मुख हो गये है ऐसी पराङ्मुख टिकी हुई यह सरसी । छोटासा सरोवर । शोभायमान नहीं । दिखाता अभिप्राय ऐसी सरसी को देखकर अत्यन्त दुःख होता है इस कारण अब तू शीघ्र जाकर श्रीकृष्ण को लिवाला ॥ ६ ॥

कुमुदिनीदयितो दयितोननतां निजकैरकैर्दहति स्फुटम् ॥ यदयमेकपदे त्रिपदेऽभवद्धिकचतुष्कारिणीहरिणीदृशः ॥ ७ ॥

हे सखि ! जिससे यह चन्द्रमा प्रकाशित कमलिनी रूप कान्ता की विपत्ति के लिये क्षणमें उदय को प्राप्त हुआ इसकारण कुमुदिनी का दयित [प्यारा] यह चन्द्रमा दुःखदायी अपनी किरणों से पति से रहित स्त्री को दग्ध करता है ॥ ७ ॥

विधुरिता धुरिता धुरिता दहन् विधुरय जनितो जनितोऽङ्कभृत् ॥ इह तदग्निगतोग्निगतेऽब्जिनी रवि मतिर्विमातिर्निमिमीलसा ॥ ८ ॥

मुख्यता को प्राप्त हुई उन प्रसिद्ध विरहिणी को दग्ध करता हुआ यह चन्द्रमा जन्मसेही कलंकी उत्पन्न हुआ है इसीसे क्षीणता को प्राप्त हुये इस चन्द्रमा को देखतेही अत्यन्त शुद्धमति और सूर्य में ही बुद्धि रखनेवाली ऐसी वह कमलिनी मुकुलित भई, यह तो योग्य ही है कि कलंकी को देख कर नेत्रों को मीच (बन्द) कर लेने के उपरान्त सूर्य का दर्शन ही प्रायश्चित्त है॥ ८ ॥

मलयपन्नगपन्नगमंडलीकवलितो वलितोनु वनानिलः ॥ अदयमंगमदंग मदंगकंदहति यद्भ्रमयद्भ्रमयन्नयम् ॥ ९ ॥

हे सखि! जिसके अंग के मथने वाला और भ्रमको उत्पन्न करने वाला यह वन का पवन भ्रम सहित मेरे इस छोटे मे अंग को निर्दय होकर दग्ध करता है इस कारण यह निश्चयही प्रतीत होता है कि चला हुआ यह बनका बायु मलया गिरि पर्वत के समीप अन्य पर्वतों में वास करते

हुये सर्पों ने पी लिया अर्थात् उनका विष इस पवन में मिल रहा है इसीसे मेरे शरीर में दाह और भ्रम है अन्यथा न होता ॥ ९ ॥

अयि रस लवनी नवनीरनीरनवनी नवनी पवनीवती ॥ अलिकुलालिकुलाऽलिकुलाकुला प्रति हिमामहिमामाहिमा हिमा ॥ १० ॥

अयि कोमलालापे सखि ! जो नवीन और जिसमें नये कदम्ब वृक्ष हैं और मेरे पीडन में तत्पर और भ्रमरों के स्थान जो मेघ उनके निवासी कोकिलों का समूह जिसमें बसता है और भ्रमरों के समूह से युक्त है और जो सर्प के समान भयानक दुःखदायी है और शीतल ऐसा भी यह रसाल (आम्र) का बन श्रीकृष्णचन्द्र के विरह से उष्ण (तपती) हुई मेरे लिये अग्नि के समान सन्ताप को देने वाला है अभिप्राय वियोग में शीतल वस्तु भी दुख देती है ॥ १० ॥

वकुलमाकुलमालि परागितं मधुपराग पराग परालिभिः ॥ विशदशारदशारदशारदं शशकलंक कलंककलंकितम् ॥ ११ ॥

हे आलि ! खिला हुआ और मधुके कणकों

को पीते और प्रीतिसे गानेवाले जो भ्रमर उससे व्याकुल। दुःख और सुखसे रहित है दशा जिनकी ऐसे बिरहिजनों को दुखदायी और दशप्रकार कामदेव की अवस्थाओं से स्त्रियों के सुखको जो भोग रहे हैं उनको सताप का नाशक अर्थात् वियोगियों को दुखदायी और दुखियोंके तापका नाशक और चन्द्रमा के समान है कांति जिसकी और वायु से कंपायमान होता वह बकुल (मौलसरी) का बृक्ष दीखता है अभिप्राय-इसके देखने से श्रीकृष्णचन्द्र जी के वियोग में मुझे दुःख होता है॥ ११ ॥

नवमशोकमशोकमशोकदे सुरभितारभितालिरतारतम् ॥ सखि समाश्रयमाश्रय माश्रयः कमलिनीमलिनी प इवाऽऽगतः ॥ १२ ॥

हे शोक के नाश करने वाली सखि! तू नवीन और शोक के नाशक और सुगंध से पुष्पों में रमते हुए भ्रमरों को रति के सुखका दाता और शोभासे युक्त जो अशोक का बृक्ष है उसका आश्रय ले अर्थात् वहां चल ऐसा करने से तू यह समझ कि वह लक्ष्मी का पति(श्रीकृष्ण चन्द्र) इस प्रकार आया कि भ्रमरों का पति (भ्रमर) कमलिनी के समीप चला जाता है अभिप्राय लक्ष्मी को भोग करके श्रीकृष्णचंद्रजी तेरेही पास आजायँगे ॥ १२ ॥

सखि हिताऽसिमतासि मतात्थ मां नवमशोक
मशोकमशोकदाम् ॥ तदिह मामवमामव माम
मां व्रज हरिं नवनीरदनीरदम् ॥ १३ ॥

हे सखि ! जिस हेतु तें श्रीकृष्णचन्द्र को शोक की दायक मेरे प्रति, नवीन और श्रीकृष्णचन्द्र को शोकदाई अशोक का वर्णन किया (नाम लिया) इससे प्रथम तू हित (प्यारी) भी थी तोभी अब मैंने आसि (खड्ग—तलवार) के समान मनोरथ वाली मानी (जानी) तिससे लक्ष्मी और ब्रह्मासे सेवित और कामी और नवीन मेघकी जो निरन्तर शोभा उसको प्राप्त (घन-श्याम) श्रीकृष्णचन्द्र जी के समीप जा और श्रीकृष्ण-चन्द्र से है शोभा जिसकी ऐसी मेरी रक्षाकर अभिप्राय श्रीकृष्णचन्द्र के वियोग से दुर्बल श्रीकृष्णजी को मेरे निकट लाकर रक्षाकर और अशोक का नामले ॥ १३ ॥

इति सखीगदिताऽगदिताऽदिता नव नराय
वराय वराय वा ॥ इति गिरं कलया कलया
कला पटुगिरा मृदुताऽमृदुता दुता ॥ १४ ॥

श्रीवृषभानु नन्दिनी राधाजी करके जब वह सखी वाधित की गई तो वह कला नामकी सखी अपनी चतु-राई से कि जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र को यह न मालूम हो

कि राधा ने सिखाकर भेजा है और श्रीकृष्ण का आगमन भी होजाय इस चतुरतावद्ध वह सखी पुराणपुरुष श्रीकृष्णचन्द्रजी के पास जाकर सुखका दाता और गंभीर और नम्रता और कठोरता से दुःख के दाता ऐसे अर्थ से गर्भित वचन कहती भई ॥ १४ ॥

मलयजं तनुतेऽतनुते तनौ सहचरी नलिनी नीलनीदलम् ॥ सुनयनाऽनलदं च सा तदपि सीदति सीदति बंधुता ॥ १५ ॥

हे श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ! आपकी यह सहचरी राधा जी अपने शरीर में यद्यपि बहुत सा मलयागिरि चन्दन लगाती है, और कमलिनी के समान वह आपकी प्यारी राधा बहुत से कमल के पत्ते शरीर पर रखती है और सुन्दर नयन (नेत्र) वाली वह आपकी प्यारी तापके नाशक उशीर (खश) को देहपर लगाती है, इतने पर भी वह आपकी प्राणप्यारी श्रीराधाजी और उनकी समस्त सखिमंडल आपके बिना दुःखी है, अभि-प्राय यह कि उपाय करने पर भी उनके दुःख की शान्ति नहीं है, इस कारण आपको चलना उचित है ॥ १५ ॥

समुदितेऽमुदितेऽमुदितेक्षणे हिमकरे मकरे नकरे श्रुति ॥ विकरतेऽसखेवर वेति सा हरिणलां छनलांछनलांछना ॥ १६ ॥

हे लक्ष्मी के स्वामी श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज

यह आपकी सहचरी (सखी) श्रीराधाजी समुद्र को सुख देने वाले चन्द्रमा के उदय होने से उदासीन होकर नेत्रों को बन्दकर लेती है और जिस समय कोकिलगण का शब्द होता तब अब रत्ता करो २ और शिव शब्द के स्थान में वे इस आधेही शब्द का उच्चारण करके शिव २ मंत्र को जपती हैं, अभिप्राय राधाजीको आपका वियोग असह्य है, इससे आप चलो और अपनी प्राणप्यारी की रक्षा करो ॥ १६॥

न सहते सहते सहते सखी तव वियोग वियोग मयोगहृत् ॥ सपदि तां तरुणी सरणिं मणिं किरतु नाम नवं नवनीबिजम् ॥ १७ ॥

हे शान्तस्वरूप ! हे गरुड़ वाहन ! हे कठोरचित्त श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ! वह आपकी सखी [राधेजी] आपके वियोग को नहीं सहती नहीं सहती [सखी ने] दोवार नहीं सहती, शब्द कहा यह अत्यन्त दुःख का सूचक हुआ इस कारण आपके मनमें बसी हुई उस तरुणी [युवावस्था युक्त या जवान] गोपी को आप शीघ्रही त्याग दो और राधा के कुंजन मार्ग में शीघ्रही चल कर राधाजी के वस्त्र में स्थित जो नवीन मणि उस का क्षेपण (फेंकना) करो अभिप्राय मन में स्थित गोपी का त्याग और राधा कुंजमें चलकर राधाजी के वस्त्र में बंधी हुई नवीन मणि को फेंक राधा जी के संग क्रीड़ा करो ॥ १७ ॥

अथ तया कलया कलया शुभां बनजदामजदाम
जदीप्तिमान्॥ हरिरगात्तमगात्तसगाच्चसा मुदमती
मतीवहृशोः स्थितम् ॥ १८ ॥

इसके बाद अनेक कमलों की मालासमूह की भांति है कान्ति जिनकी ऐसे वह श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज प्रसन्न चित्त होकर कला सखी के संग राधाजी के समीप गये वह बृषभानुनन्दिनी राधा वायु, मधु, कामदेव इनका है वर्णन जिसमें और राधाजी के हृदय के शोक का नाशक यह काव्य (राधाविनोद नामक) रच कर समाप्त किया ॥ १९ ॥

इति श्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौड़ा ग्राम निवासी पं० आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं० महाराजदीन दीक्षित कृत भाषा व्याख्ययां रामचन्द्र कवि रचित राधाविनोदकाव्यं समाप्तम् ॥

❀श्रीराधा कृष्णार्पणमस्तु❀

॥श्री शुभम् भूयात्॥

❀ श्री ❀

Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityanand Baba Ashram

श्रीराधाकृष्ण सम्वादः ।

भाषाटीकायुतः ।

का सुन्दरी बल्लभ बल्लभासु त्वच्चित्तभित्ता वद
शालभञ्जी ॥ त्वं मालतीमण्डितकेशपाशे

मच्चित्तभित्तौ किल शालभञ्जी ॥ १ ॥

किसी समय राधा ने श्रीकृष्ण के प्रति पूंछा कि हे श्री कृष्ण जी ! आप यह तो बताइये कि आपकी चित्त रूपी भीत पर चित्र की भांति कौनसी गोप सुन्दरी लिखी है ? उत्तर कृष्ण का-श्री कृष्ण ने उत्तर दिया कि हे राधे ! चमेली के पुष्पों से अपने केशों को सुशोभित करने वाली तुम हो मेरे चित्तरूपी पट पर पुतली की समान लिखी हुई हो ॥ १ ॥

पुरातनस्यापि च निर्जरत्वे को नाम हेतुर्वद सत्यमेव ॥ लावण्य धन्ये वृषभानु कन्ये तवाऽधरोत्थाऽमृत पानमेव ॥ २ ॥

राधा-हे कृष्ण ! आप पुरातन होकर युवाही बने हो बृद्ध क्यों नहीं हुये ! उत्तर कृष्ण का- हे सुन्दरी ! हे बृषभानु दुलारी !! तुम्हारे अधरामृत के पान करने से मैं बृद्ध नहीं हुआ ॥ २ ॥

पयोधरे विद्युद्भूम्मुरारे पयोधरो विद्युति नैव दृष्टः ॥ राधे स्थितामां त्वयि विद्युतीह पयोधरे द्वन्द्वमिदं व्यलोकि ॥ ३ ॥

राधा-हे मुरारे ! मेघ में तो बिजली आपने देखा ही होगा परन्तु बिजली में मेघ कहीं देखा ? उत्तर कृष्णका हे राधे ! तुम विजली रूप खड़ी हुई हो उसमें मेघ कुचरूपी मेघों का जोड़ा मैंने देखा किनहीं ॥ ३ ॥

दातुं शरीरं पर पूरुषाय नैवोत्सहेऽहं नरकाद्बिभेमि ॥
दत्ते शरीरे नरकस्य हंत्रे का नाम भीतिर्नरकाद्भवत्याः॥४॥

राधा--मैं नरक से भयानक पर पुरुष को अपना शरीर देते डरती हूँ! उत्तर कृष्ण का--हे प्रिये? यदि तुम अपने शरीर को नरक के नाश करने वाले को ही दे दो तब नरक से क्या भय है ? अर्थात् कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥

त्वं वल्लवीजारमहर्निशं या सीमान्तिनी गायति किंफलं सा ॥ प्राप्नोतिराधे व्यभिचार दोषान्मुच्येत्तथाऽसौ भवनागपाशात् ॥ ५ ॥

राधा—हे कृष्ण आप गोपियोंके जार हो इस भांति आपको जो स्त्री गाती है उसको क्या फल मिलता है। उत्तर कृष्ण का—हे राधे ! वह स्त्री व्यभिचार के दोष से और संसार रूपी नाग फांस से छूट जाती है ॥५॥

निशाऽवसाने तव विप्रयोगात् प्राणा मदीया विकलीभवन्ति ॥ राधे वद प्राणपतेर्वियोगे प्राणाः कथं नो विकलीभवेयुः ॥ ६ ॥

राधा—हे कृष्ण ! रात्रि के अन्त में तुम्हारे वियोग के कारण मेरे प्राण विकल हो जाते हैं। उत्तर कृष्ण का-हे राधे! यह तो ठीक है प्राणपति के वियोग से प्राण क्यों न विकल होजावैं ॥६॥

निर्मासि चित्ते ब्रजसुन्दरीणां कामं विभोलोचन

गोचरस्त्वम् ॥ किमत्र चित्रं तव भाति चित्ते कामस्य राधे जनकोहमस्मि ॥ ७ ॥

राधा–हे हरे! आपके दर्शनसे व्रजांगनाओं के चित्त में काम क्यों उत्पन्न होता है? उत्तर कृष्णका–हे राधे! तुमको इसमें क्या आश्चर्य मालूम होता है कारण कि मैं तो कामदेव का [प्रद्युम्न का] पिता ही हूं ॥ ७ ॥

जना जगत्यां जगदीश शश्वत् त्वां राधिका जारमुदाहरन्ति ॥ निन्दन्तु लोका यदि वा स्तुवन्तु प्राणेश्वरीत्वां न परित्यजामि ॥ ८ ॥

राधे–हे जगदीश! संसार में आपको राधिका के जार [यार] कहते हैं। उत्तर कृष्ण का–हे प्रिये! संसार में लोग मेरी निन्दा या स्तुति भले ही करैं परन्तु मैं तुझ प्राणेश्वरी को कभी न छोडूंगा ॥ ८ ॥

कलानिधिं गोकुलराजमानं श्यामाप्रियं त्वां विधुमेवमन्ये ॥ त्वदुक्तरीत्या विधुशब्दवाच्यं राधाधवं मां न कथं ब्रवीषि ॥ ९ ॥

राधे–हे कृष्ण! मैं आपको कला के निधि गोकुल अर्थात् किरणोंके समूहसे शोभायमान श्यामा [रात्रि] के प्रिय ऐसे चन्द्रमा ही मानती हूं। उत्तर कृष्ण का–हे राधे! अपनी कही हुई रीतिसे विधुशब्दके वाची राधापति क्यों नहीं कहती हो। कारण कि हम ४६

कला के निधि हैं गोकुल में विराजमान होकर श्यामा जो आपहो तिनके प्रिय हैं ॥ ९ ॥

भक्तिर्मया सा कतमा विधेया यथाप्रसादो भवतो मुरारे ॥ ममप्रसादाय विधेहि राधे भक्तिं परामात्मनिवेदनाख्याम् ॥ १० ॥

राधा–हे मुरारे ! मुझे कौनसी भक्ति करनी चाहिये कि जिससे आपको प्रसन्नता होवै ! उत्तर कृष्णका–हे राधे ! मेरे प्रसन्न करनेके लिये अपने तन, मन, धन सबको मेरे अर्पण करदो यही बड़ी भक्ति है इसी को करो ॥ १० ॥

विधिंसमुल्लंघ्य परांगनासु प्रसंगमंगीकुरुषे कथं नु । विधेर्विधातुर्विधिलंघने मे का नाम भीतिर्भण भामिनीह

राधा–हे कृष्ण ! आप अपनी मर्यादा का उल्लंघन करके परस्त्री संग क्यों करना अंगीकार करते हो ? उत्तर कृष्ण का–हे भामिनी ! मैं विधाताका भी विधाता हूं तो फिर विधि के उल्लंघन में मुझे क्या भय है ॥ ११ ॥

उदीर्यमाणेऽपि च सान्त्ववादे मानापनोदो नहि राधिकायाः ॥ मानोऽस्तु ते यद्यपराधकःस्यां स्पप्नेऽपि नैवाऽस्म्यपराधिकोहम् ॥ १२ ॥

राधा–हे कृष्ण ! आपने अत्यन्त मीठी २ बातें तो कहीं परन्तु इससे मुझे राधिका का मान दूर नहीं हुआ । उत्तर कृष्ण का–हे राधिके ! जो मैं अपराधी

कृष्णदास
कुसुमसरोवर

होऊँ तो तुम्हारा मान भलेही होय अर्थात् मैं तो तुम्हारा अपराधी स्वप्न में भी नहीं हूं ॥ १२ ॥

मुक्तिं समीयुर्भवबन्ध (भीति) भावजो भव-
त्पदाम्भोज रजोजुषन्तः ॥ बद्धस्त्वयाहं भुजबल्ल
रीभ्यां राधानिकुँजे मधुमाधवीनाम् ॥ १३ ॥

राधा–हे कृष्ण ! आपके चरण कमल की रेणुका सेवन करने वाले पुरुष संसार बन्धन से छूट जाते हैं। उत्तर कृष्ण का–हे राधे ! तो भी तूने अपनी भुजलताओं से माधवीलताओं के कुंजों में बांध लिया है ॥१३॥

आभीरनार्याः करमादधानो न शंकसे माधव
किं ब्रवीषि ॥ पल्लीपतिर्वल्लवबल्लभायाः
करग्रहे किं विदधीत शंकाम् ॥ १४ ॥

राधा–हे माधव ! गोप की स्त्री का हाथ पकड़े हुये आप क्यों नहीं शंका करते हो ? उत्तर कृष्ण का–हे राधे! आभीर जाति का पति गोप की स्त्री के हाथ पकड़ने में क्या शंका करेगा कदापि शंका न करैगा॥ १४॥

इति श्री उनाव प्रदेशान्तर्गत बरौड़ा ग्रामनिवासी
पं० महाराजदीन दीक्षित कृत भाषा व्याख्यायां
श्री राधा कृष्ण सम्वाद नामकं काव्यं सम्पूर्णतामगात् ।

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

❋ इति ❋

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर
-: द्वारा :-
प्रकाशित।

संस्कृत के अपूर्व ग्रन्थ।

❀ माधव निदान वैद्यक भाषा टीका ❀

इसमें नाना प्रकार के रोगों की चिकित्सा करना बड़ी सरल भाषा के साथ छपा है। मूल्य २)

❀ मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका ❀

मूल श्लोकके साथ सरल हिन्दी भाषा है। प्रत्येक विद्यार्थी के लाभार्थ पुस्तक बहुत शुद्ध कराकर छापी गयी है। पक्की जिल्द का मूल्य १॥)

❀ लघु सिद्धान्त कौमुदी ❀

यह लघु सिद्धान्त कौमुदी बहुत ही शुद्ध तथा टिप्पणीके सहित चिकने कागज पर छपी है। मूल्य ॥)

❀ लघु संग्रह भाषा टीका ❀

प्रत्येक नक्षत्रोंका गुण। किस नक्षत्रमें क्या करना चाहिये इसे पढ़े, यह बहुत शुद्ध है। मूल्य ॥)

पुस्तक मिलने का पता-

बाबू बैजनाथप्रसाद बुकसेलर,

राजा दरवाजा बनारस।

॥ श्री: ॥

पं० श्रीजयदेव कवि विरचितम्।

गीत गोविन्द

महाकाव्यम्

भाषाटीका सहितम्।

सेला-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलरेण,

प्रकाशिता।

मूल्य ॥)

❀ श्रीकृष्णायनमः ❀

श्री पं० जयदेव कवि-

विरचितम् ।

श्री गीतगोविन्दम् ।

राधाविनोद काव्यञ्च ।

तच्च

पं० महाराजदीन दीक्षितेन

भाषाटीकया समलंकृतम् ।

तदिदम् काश्यां-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलरेण

स्वकीये "श्री विश्श्वेश्वर" मुद्रण यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

१६२६

Vrindavan Das
Govind Kund, Vrindavan
Nityanand Baba Ashram